International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

औपनिवेशिक भारत में महिला वं राष्ट्रवादी आंदोलन

गीता यादव

शोधार्थी, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर –124021, रोहतक

डॉ. यशपाल सिंह

शोध निर्देशक, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर –124021, रोहतक

शोध सारः

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक रही है। ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त करने के संघर्ष की दिशा को आकार देने में महिलाओं ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 1947 तक, भारत भर की महिलाओं ने प्रतिरोध के विभिन्न रूपों में भाग लिया, जिनमें राजनीतिक सक्रियता, क्रांतिकारी गतिविधियाँ और सामाजिक सुधार शामिल थे। यह शोध–पत्र महिलाओं की विविध भूमिकाओं की चर्चा करता है, जिनमें बेगम हजरत महल और भीकाजी कामा जैसी प्रारंभिक अग्रदूत महिलाओं के साथ–साथ सरोजिनी नायडू और कस्तूरबा गांधी जैसी अहिंसक आंदोलनों की प्रभावशाली हस्तियाँ भी सम्मिलित हैं। इसमें महिलाओं की क्रांतिकारी गतिविधियों में भागीदारी, असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन जैसे प्रमुख आंदोलनों में उनके नेतृत्व, तथा स्वतंत्रता के बाद भारत पर उनके स्थायी प्रभाव का विश्लेषण किया गया है। महिलाओं द्वारा निभाई गई इस महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करते हुए यह अध्ययन यह सिद्ध करता है कि राजनीतिक और सामाजिक दोनों क्षेत्रों में उनकी भागीदारी ने एक परिवर्तनकारी प्रभाव डाला, जिसने भारत की स्वतंत्रता–यात्रा और उसके बाद के विकास पर स्थायी विरासत छोड़ी।

मुख्य शब्दः भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, महिला नेता, असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, क्रांतिकारी गतिविधियां

1. परिचयः

भारत का स्वतंत्रता संग्राम विश्व इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण और दीर्घकालिक स्वतंत्रता आंदोलनों में से एक था, जो लगभग दो शताब्दियों तक चला। यह एक जटिल प्रक्रिया थी, जिसमें प्रतिरोध के अनेक चरण शामिल थे, जैसे विद्रोह, अहिंसक सविनय अवज्ञा और सशस्त्र संघर्ष। इस संघर्ष का उद्देश्य भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से मुक्त कराना था, जिसकी शुरुआत 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रभुत्व की स्थापना के बाद हुई। भारत के स्वतंत्रता संग्राम की नींव 18वीं शताब्दी में देखी जा सकती है, जब ब्रिटिश ईस्ट इंडिया

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

कंपनी ने सैन्य विजय और आर्थिक शोषण के माध्यम से भारतीय क्षेत्रों पर धीरे–धीरे अपना नियंत्रण बढ़ाया। 19वीं शताब्दी के मध्य तक, मुगल साम्राज्य के विघटन और रियासतों के अधिग्रहण के बाद ब्रिटिश शासन औपचारिक रूप से स्थापित हो गया। हालांकि, ब्रिटिश नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था और पारंपरिक जीविकाओं पर गहरा प्रतिकूल प्रभाव डाला, साथ ही व्यापक नस्लीय भेदभाव ने भारतीयों के बीच असंतोष को और बढ़ा दिया। इस असंतोष की सबसे प्रारंभिक व्यापक अभिव्यक्तियों में से एक 1857 का विद्रोह था, जिसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के नाम से भी जाना जाता है। यद्यपि यह विद्रोह अंततः सफल नहीं हुआ, फिर भी इसने भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ प्रस्तुत किया। ब्रिटिश सरकार ने ईस्ट इंडिया कंपनी से भारत का प्रत्यक्ष शासन अपने हाथ में ले लिया, लेकिन प्रतिरोध के बीज पहले ही बोए जा चुके थे। आने वाले कुछ दशकों में, कई राजनीतिक संगठनों और आंदोलनों की स्थापना हुई, जिनमें 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) भी शामिल थी, जो राष्ट्रवादी आकांक्षाओं को व्यक्त करने के लिए एक प्रमुख मंच बनी। 20वीं शताब्दी में महात्मा गांधी स्वतंत्रता आंदोलन के केंद्रीय व्यक्तित्व के रूप में उभरे। गांधी की अहिंसा (अहिंसा) और सविनय अवज्ञा (सत्याग्रह) की विचारधारा ने लाखों भारतीयों को ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन–आंदोलनों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। असहयोग आंदोलन (1920–22), सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) जैसे प्रमुख अभियानों में समाज, आर्थिक और धार्मिक सभी वर्गों के लोगों की व्यापक भागीदारी देखी गई।

इन आंदोलनों ने भारतीयों को एकजुट करने और ब्रिटिश सरकार पर दबाव बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी अवधि में सशस्त्र प्रतिरोध की वकालत करने वाले क्रांतिकारी समूह भी सक्रिय थे। भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद और सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं ने उग्र विद्रोहों का नेतृत्व किया और स्वतंत्रता संग्राम में अधिक आक्रामक दृष्टिकोण को प्रेरित किया। बोस द्वारा भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिशों के विरुद्ध उसकी सैन्य कार्रवाइयों ने स्वतंत्रता संग्राम को एक और आयाम दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार पर भारत से अपना नियंत्रण छोड़ने का दबाव और बढ़ गया, जिसे ब्रिटेन की आर्थिक कठिनाइयों तथा भारत के भीतर स्वशासन की बढ़ती मांग ने और तीव्र किया। भारतीय नेताओं और ब्रिटिश सरकार के बीच हुई वार्ताओं के परिणामस्वरूप अंततः सत्ता का हस्तांतरण हुआ। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ, हालांकि यह देश के विभाजन के साथ हुआ, जिसके फलस्वरूप भारत और पाकिस्तान—दो राज्यों का निर्माण हुआ और व्यापक सांप्रदायिक हिंसा तथा विस्थापन हुआ। भारत का स्वतंत्रता संग्राम अपार बलिदानों से भरा हुआ था, जिसमें असंख्य लोगों ने अपने प्राण गंवाए, और देश का सामाजिक–राजनीतिक ताना–बाना स्थायी रूप से बदल गया। फिर भी, इसने एक गहरी एकता, राष्ट्रवाद और लोकतांत्रिक आदर्शों की

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

भावना को जन्म दिया, जिसने आधुनिक भारतीय गणराज्य की नींव रखी। यह आंदोलन केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि सामाजिक सुधार, आर्थिक न्याय और समानता के संघर्ष से भी जुड़ा था, जो स्वतंत्रता के बाद के वर्षों में भी भारत की दिशा को प्रभावित करता रहा।

2. 19वीं शताब्दी से 1947 तक भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन

19वीं शताब्दी से 1947 तक का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन एक परिवर्तनकारी काल था, जो ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध प्रतिरोध के अनेक चरणों से चिह्नित रहा। इसकी शुरुआत 19वीं शताब्दी में उन प्रारंभिक प्रयासों से हुई, जब सामाजिक सुधारकों और बुद्धिजीवियों ने ब्रिटिश शोषण तथा स्वशासन की आवश्यकता के बारे में जागरूकता फैलानी शुरू की। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने सुधारों और बाद में पूर्ण स्वतंत्रता पर चर्चा के लिए एक मंच प्रदान किया। पहला बड़ा विद्रोह 1857 का सिपाही विद्रोह था, जिसे प्रायः प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम माना जाता है। यद्यपि इसे कुचल दिया गया, फिर भी इसने पूरे देश में राष्ट्रवादी भावनाओं को प्रज्वलित कर दिया। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ तक, बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने स्वराज्य (स्व–शासन) की वकालत की, जो स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरक नारा बन गया। 1920 के दशक में महात्मा गांधी एक केंद्रीय व्यक्तित्व के रूप में उभरे, जिन्होंने असहयोग आंदोलन (1920–22) और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930–34) जैसे आंदोलनों के माध्यम से अहिंसक नागरिक अवज्ञा को एक रणनीति के रूप में प्रस्तुत किया[i]। इन अभियानों में भारत के सभी वर्गों के लोगों ने व्यापक रूप से भाग लिया और ब्रिटिश शासन के अंत की मांग की। इसी समय भगत सिंह और सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रांतिकारी नेताओं ने अधिक उग्र मार्ग अपनाया, जिससे ब्रिटिश सरकार पर और अधिक दबाव पड़ा। 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन एक महत्वपूर्ण मोड़ था, क्योंकि इसने व्यापक विरोध–प्रदर्शनों और ब्रिटिश दमन को जन्म दिया। द्वितीय विश्व युद्ध ने ब्रिटेन के आर्थिक और राजनीतिक नियंत्रण को कमजोर कर दिया, और 1947 तक स्वतंत्रता की बढ़ती मांगों तथा भारतीय नेताओं के साथ वार्ताओं के बीच भारत अंततः स्वतंत्र हो गया। हालांकि, स्वतंत्रता के साथ देश का विभाजन हुआ और भारत तथा पाकिस्तान का निर्माण हुआ, जिससे बड़े पैमाने पर विस्थापन और हिंसा हुई।

3. राष्ट्रवाद का उदय और राजनीति में महिलाओं का प्रवेश

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में भारत में राष्ट्रवाद का उदय स्वतंत्रता संग्राम की एक अत्यंत महत्वपूर्ण शक्ति थी। इस काल में राजनीतिक चेतना और स्वशासन की मांग तेजी से बढ़ी, जिसने सीधे ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी। राष्ट्रवादी नेताओं, सामाजिक सुधारकों और बुद्धिजीवियों ने इस आंदोलन में व्यापक भागीदारी को प्रेरित किया, और जो महिलाएँ परंपरागत रूप से घरेलू भूमिकाओं तक सीमित थीं, वे धीरे–धीरे बड़ी संख्या

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

में राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश करने लगीं। राष्ट्रवादी जागरण को कई कारकों ने बल दिया, जिनमें दमनकारी ब्रिटिश नीतियाँ, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक गर्व की बढ़ती भावना शामिल थी। बाल गंगाधर तिलक, दादाभाई नौरोजी और गोपाल कृष्ण गोखले जैसे प्रारंभिक नेताओं ने अधिक राजनीतिक अधिकारों, स्वशासन और सुधारों की वकालत करना शुरू किया। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना ने राजनीतिक परिवर्तन पर चर्चा और उसे आगे बढ़ाने के लिए एक औपचारिक मंच प्रदान किया। साथ ही, राजा राम मोहन राय और ईश्वर चंद्र विद्यासागर जैसे व्यक्तियों के नेतृत्व में महिलाओं की स्थिति सुधारने वाले सामाजिक सुधार आंदोलनों ने सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी के लिए अधिक अनुकूल वातावरण बनाया[ii]। 20वीं शताब्दी की शुरुआत में जब राष्ट्रवादी आंदोलन ने गति पकड़ी, तब महात्मा गांधी का नेतृत्व महिलाओं की भागीदारी में एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ। गांधी की समावेशी अहिंसक प्रतिरोध की विचारधारा ने महिलाओं को विरोध–प्रदर्शनों, बहिष्कारों और सविनय अवज्ञा अभियानों में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम का समान भागीदार माना, जिससे सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी और कमला नेहरू जैसी हस्तियाँ नेतृत्वकारी भूमिकाओं में आईं। उन्होंने विरोधों का आयोजन किया, महिला समूहों को संगठित किया और नमक मार्च तथा भारत छोड़ो आंदोलन जैसे अभियानों में भाग लिया। महिलाओं ने क्रांतिकारी गतिविधियों में भी योगदान दिया। भीकाजी कामा, जिन्होंने जर्मनी में प्रथम भारतीय ध्वज फहराया, और प्रीतिलता वड्डेदार, जिन्होंने बंगाल में सशस्त्र प्रतिरोध का नेतृत्व किया, जैसी हस्तियों ने साहस और समर्पण का उदाहरण प्रस्तुत किया। ये महिलाएँ केवल भागीदार नहीं थीं, बल्कि समाज की रूढ़ियों और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को चुनौती देने वाली नेता भी थीं। राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान महिलाओं का राजनीतिक क्षेत्र में प्रवेश एक परिवर्तनकारी बदलाव था। इसने उन्हें पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकलकर अपनी राजनीतिक क्षमता स्थापित करने का अवसर दिया। उनका योगदान स्वतंत्रता के लिए जन–समर्थन जुटाने में अत्यंत महत्वपूर्ण था, और उनकी भागीदारी ने स्वतंत्र भारत में महिलाओं के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन में प्रवेश की नींव रखी[iii]।

भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रारंभिक अग्रदूतों ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का विरोध करने में एक आधारभूत भूमिका निभाई, और आने वाली पीढ़ियों के कार्यकर्ताओं तथा नेताओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया। यद्यपि यह आंदोलन 20वीं शताब्दी में व्यापक जन–आंदोलन के रूप में उभरा, इसकी नींव 19वीं शताब्दी के अनेक प्रमुख व्यक्तियों के प्रयासों पर टिकी थी, जिनमें पुरुष और महिलाएँ दोनों शामिल थे, जिन्होंने अपने–अपने तरीकों से ब्रिटिशों के विरुद्ध साहसपूर्वक संघर्ष किया। इन अग्रदूतों में अनेक महिलाएँ प्रतिरोध के सशक्त प्रतीक के रूप में उभरीं, जिन्होंने दूसरों को भी इस उद्देश्य से जुड़ने के लिए प्रेरित किया।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई

प्रतिरोध की सबसे प्रारंभिक और सबसे प्रतिष्ठित हस्तियों में से एक रानी लक्ष्मीबाई थीं, जो झाँसी की रानी थीं और जिन्होंने 1857 के विद्रोह, जिसे प्रथम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम भी कहा जाता है, में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जब ब्रिटिशों ने डॉकेट्रिन ऑफ लैप्स (व्यपगत सिद्धांत) के अंतर्गत उनके राज्य को हड़पने का प्रयास किया, तब लक्ष्मीबाई ने औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया[पअ]। उन्होंने अद्भुत साहस और कौशल के साथ अपने सैनिकों का नेतृत्व युद्ध में किया और आने वाली पीढ़ियों के लिए वीरता का प्रतीक बन गईं। यद्यपि वे ब्रिटिशों को पराजित करने में सफल नहीं हुईं, फिर भी उनके साहसी प्रयासों ने स्वतंत्रता संग्राम में एक स्थायी विरासत छोड़ी[v]।

बेगम हजरत महल

1857 के विद्रोह की एक अन्य प्रमुख हस्ती बेगम हजरत महल थीं, जो अवध की बेगम थीं। जब ब्रिटिशों ने उनके पति नवाब वाजिद अली शाह को पदच्युत कर दिया, तब उन्होंने लखनऊ में प्रतिरोध का नेतृत्व अपने हाथों में लिया। बेगम हजरत महल एक कुशल नेता सिद्ध हुईं । उन्होंने ब्रिटिशों के विरुद्ध सेनाओं को संगठित किया और ब्रिटिश प्रभुत्व को स्वीकार करने से इनकार कर दिया। लखनऊ को लंबे समय तक ब्रिटिश नियंत्रण से मुक्त बनाए रखने के उनके प्रयासों ने उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक उग्र योद्धा रानी के रूप में स्थापित किया[vi]।

भीकाजी कामा

20वीं शताब्दी के प्रारंभ में भीकाजी कामा विदेश में रहकर भारत की स्वतंत्रता की एक शक्तिशाली आवाज बनकर उभरीं। सशस्त्र क्रांति की समर्थक के रूप में उन्होंने ब्रिटिश शासन के अधीन भारत की दयनीय स्थिति के बारे में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता फैलाई। 1907 में उन्होंने जर्मनी के स्टटगार्ट में एक समाजवादी सम्मेलन में भारतीय ध्वज के प्रारंभिक रूपों में से एक को फहराया, जो भारतीय राष्ट्रवादी चेतना का एक महत्वपूर्ण क्षण था। वैश्विक मंच पर भारतीय स्वतंत्रता के समर्थन को संगठित करने में भीकाजी कामा का कार्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण को आकार देने में अत्यंत महत्वपूर्ण था[vii]।

सावित्रीबाई फुले

यद्यपि सावित्रीबाई फुले को अधिकतर महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक सुधार के कार्यों के लिए जाना जाता है, फिर भी वे उपनिवेशवाद और जातिगत उत्पीड़न के व्यापक संघर्ष में एक महत्वपूर्ण हस्ती थीं। अपने पति ज्योतिराव फुले के साथ मिलकर उन्होंने वंचित समुदायों के उत्थान के लिए काम किया और शिक्षा को मुक्ति का साधन बनाया। विशेष रूप से महिलाओं के अधिकारों और अस्पृश्यता उन्मूलन के संबंध में फुले दंपति का सामाजिक न्याय आंदोलन में

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

योगदान इतना महत्वपूर्ण था कि इसने बाद के नेताओं को यह दृष्टि दी कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल ब्रिटिशों के विरुद्ध संघर्ष नहीं, बल्कि सामाजिक असमानता के विरुद्ध भी संघर्ष है[viii]।

4. असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी

असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत दिया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1920 और 1930 के दशकों में चले इन आंदोलनों ने भारत के विभिन्न हिस्सों में व्यापक जनसमूह को संगठित किया और महिलाओं को अभूतपूर्व संख्या में राजनीतिक मंच पर लाया। जो महिलाएँ पहले मुख्यतः पारंपरिक घरेलू भूमिकाओं तक सीमित थीं, वे राष्ट्रीय स्वतंत्रता अभियानों में सक्रिय भागीदार और नेता बन गईं।

असहयोग आंदोलन 1920 में महात्मा गांधी द्वारा जलियाँवाला बाग हत्याकांड और ब्रिटिश सरकार के दमनकारी शासन के प्रत्युत्तर में आरंभ किया गया था। इसने ब्रिटिश वस्तुओं, संस्थाओं और सेवाओं के बहिष्कार के साथ–साथ ब्रिटिश उपाधियों और सम्मानों को अस्वीकार करने का आह्वान किया। यह आंदोलन भारत के सभी वर्गों के लोगों की पहली व्यापक जन–भागीदारी का प्रतीक बना, और पहली बार महिलाओं ने बड़ी संख्या में इसमें भाग लेना शुरू किया[ix]।

महिलाओं ने इस आंदोलन में ब्रिटिश वस्तुओं, विशेषकर विदेशी कपड़ों, के बहिष्कार का आयोजन करके तथा हड़तालों, विरोध–प्रदर्शनों और जुलूसों में भाग लेकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने आयातित विलासिता–सामग्रियों का त्याग किया, स्वदेशी वस्तुओं को अपनाया, और खादी (हाथ से बुना हुआ कपड़ा) कताई को लोकप्रिय बनाने में मदद की, जो ब्रिटिश आर्थिक शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक बन गया।

सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी और बसंती देवी जैसी प्रमुख महिलाएँ इस अवधि में नेतृत्वकारी रूप में उभरीं। विशेष रूप से सरोजिनी नायडू अपनी प्रभावशाली वक्तृत्व कला और नेतृत्व के लिए जानी गईं[x]। वे देशभर में घूमीं और महिलाओं से आंदोलन में शामिल होने तथा स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भागीदारी करने की अपील की। कस्तूरबा गांधी, जो महात्मा गांधी की पत्नी थीं, ने अनेक विरोध–प्रदर्शनों में भाग लिया और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार के लिए महिलाओं को संगठित किया। असहयोग आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी ऐतिहासिक थी, क्योंकि इसी के माध्यम से वे सार्वजनिक और राजनीतिक क्षेत्र में आईं। यद्यपि 1922 में चौरी–चौरा घटना के बाद यह आंदोलन स्थगित कर दिया गया, फिर भी इसने आगे आने वाले आंदोलनों में और भी अधिक भागीदारी के लिए आधार तैयार किया।

1930 में आरंभ हुआ सविनय अवज्ञा आंदोलन भारत के स्वतंत्रता संग्राम का एक और अत्यंत महत्वपूर्ण चरण था। इस आंदोलन का उद्देश्य अहिंसक नागरिक अवज्ञा के माध्यम से ब्रिटिश

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

कानूनों को सीधे चुनौती देना था, और इसका सबसे प्रसिद्ध प्रसंग नमक मार्च था, जिसे दांडी मार्च भी कहा जाता है। इस यात्रा में गांधी और उनके अनुयायी ब्रिटिश कानूनों की अवहेलना करते हुए अरब सागर तक गए और नमक बनाया।

गांधी ने स्पष्ट रूप से महिलाओं से इस आंदोलन में भाग लेने का आह्वान किया, और महिलाओं ने इसमें केंद्रीय भूमिका निभाई। उन्होंने विरोध–प्रदर्शनों में भाग लिया, नमक कानूनों का उल्लंघन किया, और बड़ी संख्या में गिरफ्तारियाँ दीं। उनका यह योगदान विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण था क्योंकि नमक एक आवश्यक घरेलू वस्तु था, और घरेलू क्षेत्र से महिलाओं का संबंध उनकी अवज्ञा को और अधिक प्रतीकात्मक बनाता था[xi]। सरोजिनी नायडू एक बार फिर एक प्रमुख नेता के रूप में उभरीं। उन्होंने 1930 में धरसाना नमक सत्याग्रह का प्रसिद्ध नेतृत्व किया, जहाँ उन्होंने और सैकड़ों अहिंसक प्रदर्शनकारियों ने पुलिस की क्रूर दमनात्मक कार्रवाई का सामना किया। इस विरोध में नायडू का साहस और नेतृत्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना और इसने आंदोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर किया। एक अन्य महत्वपूर्ण हस्ती कमलादेवी चट्टोपाध्याय थीं, जिन्होंने न केवल नमक मार्च में भाग लिया, बल्कि ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार का नेतृत्व किया, शराब की दुकानों पर धरना दिया और स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा दिया। उन्हें मुंबई में नमक बेचने का प्रयास करने पर गिरफ्तार किया गया और वे इस आंदोलन में जेल जाने वाली पहली महिलाओं में से एक बनीं। कमलादेवी महिलाओं के अधिकारों और स्वतंत्रता संग्राम में उनकी भागीदारी की भी प्रबल समर्थक थीं।

हजारों साधारण महिलाएँ, जिनमें से कई ने पहले कभी सार्वजनिक जीवन में भाग नहीं लिया था, इस आंदोलन में शामिल हुईं। उन्होंने विदेशी वस्तुएँ बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया, जुलूसों में भाग लिया और पुरुषों के साथ जेल भी गईं। नागरिक अवज्ञा के ये कार्य न केवल ब्रिटिश कानूनों को चुनौती देने वाले थे, बल्कि भारतीय समाज के भीतर मौजूद अवरोधों को भी तोड़ने वाले थे, क्योंकि महिलाओं ने सार्वजनिक क्षेत्र में अपने अधिकारों को मुखर करना शुरू किया।

इसके अतिरिक्त, महिलाओं की व्यापक भागीदारी ने विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और सामाजिक वर्गों के लोगों को स्वतंत्रता के साझा उद्देश्य में एकजुट करने में मदद की। उनकी भागीदारी ने स्वतंत्रता आंदोलन को अधिक व्यापक और समावेशी आधार प्रदान किया तथा अहिंसक प्रतिरोध की शक्ति को प्रदर्शित किया। इन आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी ने आगे आने वाली पीढ़ियों की महिलाओं को भी राजनीतिक सक्रियता अपनाने के लिए प्रेरित किया। सरोजिनी नायडू, कस्तूरबा गांधी और कमलादेवी चट्टोपाध्याय जैसी हस्तियाँ आदर्श बन गईं, और उनके योगदान को स्वतंत्रता संग्राम की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक माना गया।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

अरुणा आसफ अली एक प्रखर क्रांतिकारी नेता थीं, जिन्हें 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उनकी भूमिका के लिए विशेष रूप से याद किया जाता है। उन्हें मुंबई के गोवालिया टैंक मैदान में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का झंडा फहराने के लिए जाना जाता है, जो आंदोलन की शुरुआत का प्रतीक था। इस अवधि में उनके नेतृत्व ने उन्हें "स्वतंत्रता आंदोलन की ग्रैंड ओल्ड लेडी" की उपाधि दिलाई। अरुणा आसफ अली भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत गतिविधियों में सक्रिय रहीं, गिरफ्तारी से बचते हुए ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विरोध और हड़तालों का आयोजन करती रहीं। ब्रिटिश अधिकारियों के प्रति उनकी निर्भीकता ने उन्हें प्रतिरोध का प्रतीक बना दिया, और उनके साहस ने पुरुषों और महिलाओं दोनों को कठोर दमन के बावजूद स्वतंत्रता की लड़ाई जारी रखने के लिए प्रेरित किया। क्रांतिकारी गतिविधियों के साथ–साथ अरुणा आसफ अली एक विचारक और सामाजिक परिवर्तन की समर्थक भी थीं। स्वतंत्रता के बाद भी उन्होंने सामाजिक न्याय के लिए कार्य जारी रखा और महिलाओं के अधिकारों तथा नागरिक स्वतंत्रताओं की प्रबल पक्षधर बनी रहीं, जिससे उन्होंने स्वतंत्र भारत के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया[xii]।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः, भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी थी। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति तक, जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से आई महिलाओ चाहे वे प्रारंभिक अग्रदूत रही हों, असहयोग और सविनय अवज्ञा जैसे जन–आंदोलनों की सहभागी रही हों, या क्रांतिकारी नेता रही हों, ने औपनिवेशिक शासन को चुनौती देने और राष्ट्रीय एकता को प्रेरित करने में निर्णायक भूमिका निभाई। उनके योगदान केवल राजनीतिक सक्रियता तक सीमित नहीं थे, बल्कि उन्होंने सामाजिक सुधार, महिलाओं के अधिकारों और न्याय के लिए भी संघर्ष किया, जिससे भारत का सामाजिक परिदृश्य बदल गया। सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट और अरुणा आसफ अली जैसी दूरदर्शी महिलाओं ने न केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध मोर्चा संभाला, बल्कि स्वतंत्रता के बाद भारत में लैंगिक समानता और नागरिक अधिकारों के संघर्ष की नींव भी रखी। इन महिलाओं के बलिदान और नेतृत्व ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक अधिक समावेशी और लैंगिक–सचेत संघर्ष में परिवर्तित कर दिया, जिससे यह सुनिश्चित हुआ कि स्वतंत्र और लोकतांत्रिक भारत की कल्पना में महिलाओं की आवाज और उनकी चिंताएँ अनिवार्य रूप से सम्मिलित हों। उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को निरंतर प्रेरित करती रहेगी, और स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भागीदारी के स्थायी प्रभाव को उजागर करती रहेगी।

International Journal of Advanced Research and Multidisciplinary Trends (IJARMT)
An International Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 Website: https://ijarmt.com ISSN No.: 3048-9458

संदर्भ सूची

[i] भट्टाचार्य, एस., और सचदेव, बी. के. (2021). भारत में स्वतंत्रता संग्राम के लिए महिलाओं की प्रभावशाली भूमिका और उनका योगदान। वर्ल्ड जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च एंड रिव्यूज, 12(3), 124–130।

[ii] रानी, एस. (2020). भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 8(7), 4153–4156।

[iii] कौर, एस. (2013). भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड सोशल साइंसेज रिसर्च (IJMSSR), 2(4), 112–114।

[iv] मिश्रा, एस. सी. (2011), 1857 का भारतीय विद्रोह और महिलाएँ, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

[v] ग्रोवर, बी. एल. एवं ग्रोवर, एस. (2018), आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चंद एंड कंपनी, नई दिल्ली।

[vi] मिश्रा, एस. सी. (2011), 1857 का भारतीय विद्रोह और महिलाएँ, क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

[vii] सुमित सरकार (1983), मॉडर्न इंडिया 1885द्1947, मैकमिलन, नई दिल्ली।

[viii] फुले, सावित्रीबाई (1994), सावित्रीबाई फुले समग्र वाङ्मय, महाराष्ट्र राज्य साहित्य संस्कृति मंडल, मुंबई।

[ix] बिपिन चंद्र (2009), भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।

[x] सरोजिनी नायडू (1961), Speeches and Writings of Sarojini Naidu, किटाबिस्तान, इलाहाबाद।

[xi] अमीन, ए. (2023). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और असमिया महिलाएं। इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल

[xii] केतकर, कुसुम (2010), भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में महिला नेतृत्व, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।